शोध ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-28 **VOLUME-5** ISSN-2454-6283 **April-Jun**–2022

IMPACT FACTOR - **(IIJIF-7.312)** **SJIF-6.586,** IIFS-4.125,

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकी सम्पादक

अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-28 VOLUME-5 IMPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 अप्रैल–जून, 2022

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

IMPACT FACTOR- IIJIF-7.312 NEW

शोध-ऋतु

5

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसायटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

18.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध के अंतर्गत दांपत्यगत मूल्य 58
–हेम लता 58
19.प्राचीन मथुरा जनपद का बौद्ध इतिहास....................61
–[1]दीपक कुमार, [2]डॉ.नीरजा शर्मा....................61
20.राजेश जोशी द्वारा समाज और भाषा सम्बन्धी चिंता 64
–लता.बी. 64
21.हिन्दी की सामासिक क्रियाओं का आर्थी पक्ष 65
–डॉ.वीणा गांधी....................65
22.हिंदी सिनेमा में स्त्री–अस्मिता 68
–डॉ.सुमित कुमार मीना, ...68
23.सन्त कवि अक्षर अनन्य के सामाजिक सरोकार 72
–अरुण कुमार द्विवेदी 72
24.हिन्दी सिनेमा का बदलता स्वरूप (1990 के बाद के सिनेमा के संबंध में)....................75
–सिमरन....................75
25.बौद्ध धर्म का पतन : क्यों और कैसे?....................77
–अभिषेक कुमार उपाध्याय....................77
26.अनामिका के काव्य में 'तुम' की अवधारणा 80
–महेश पानेरी 80
27.योग और ध्यान के माध्यम से तनाव प्रबंधन....................82
–डॉ.सरोजिनी 82
28.शैक्षिक उद्देश्य : दार्शनिक पृष्ठभूमि 84
–डॉ.अपर्णा त्रिपाठी....................84
29.श्रीरामचरितमानस में चित्रित श्रीरामजी और शबरी संवाद 86
–डॉ.शंकर रामभाऊ पजई....................86
30.युवा पीढ़ी संघर्ष और सूर्यबाला की कहानियाँ....................88
–[1]कु.दीपाली.डी.मिरेकर, [2] प्रो.नामदेव गौडा....................88
31.डॉ.मधुधवन की कहानियों में माँ का आधुनिक रूप 91
–पी.विद्यालता देवी....................91
32.Modern Indian Republic Constitution Reflection Of Ancient Indian Republic Experiment....................93
- [1]*Shinde Shivaji Kondiba,2Prof. Dr. Patil Gajanan S.*....................93
33.शिगाफ उपन्यास में कश्मीरी पंडितों की समस्या....................95
-सत्यवान आर्य....................95
34.बहुदेवतावाद तथा एकेश्वरवाद "महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में" 97
–डॉ.सत्यवती....................97

बहुदेवतावाद तथा एकेश्वरवाद "महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में"

–डॉ सत्यवती
सह आचार्य–संस्कृत,
एम.जे.डी. राजकीय महाविद्यालय, तारानगर, चूरु

संसार के प्रायः समस्त धर्मों का केन्द्र बिन्दु ईश्वर है परन्तु ईश्वर के अस्तित्व, स्वरूप और आवश्यकता आदि विषय पर भिन्न-भिन्न मत दृष्टिगोचर होते हैं। इस भिन्नता के स्वरूप ही मनुष्यों व विभिन्न सम्प्रदायों में परस्पर अनावश्यक कलह व विद्वेष उत्पन्न होता है। यह विद्वेष ही प्राणिमात्र की उन्नति व सौहार्द के स्थापन में बाधक है। सच्ची शान्ति व सौहार्द का स्थापन ईश्वर के सही स्वरूप (गुण, कर्म व स्वभाव) आदि के यथार्थ ज्ञान से ही हो सकता है। ईश्वर के विषय में विभिन्न भ्रान्त धारणाएँ अवतारवाद अनेकेश्वरवाद, बहुदेवतावाद आदि का विश्लेषण किया गया है। वेदों में देवता एक है अथवा अनेक हैं इस सम्बन्ध में वैदिक विद्वानों में अत्यधिक मतभेद दृष्टिगोचर होता है। कोई सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का संचालन करने वाली एक शक्ति को एक देव मानता है। किन्हीं के मत में प्रत्येक स्थान का अपना पृथक् देवता है। इस विषय में स्पष्टीकरण से पूर्व, देव और देवता शब्द का अर्थ स्पष्ट करना आवश्यक है क्योंकि तभी एक देवतावाद और बहुदेवतावाद को समझा जा सकता है। यास्कीय निरूक्त में देव शब्द दा, द्युत्, दीप् और दिवु इन चार धातुओं से सिद्ध किया है। "देवो दानादवा दीपनाद् वा द्योतनाद् द्युस्थानो भवतीति वा "।यो देव: सा देवता।"[1] अर्थात् ज्ञान, प्रकाश, शान्ति, आनन्द तथा सुख देने वाली सभी वस्तुओं का देव नाम से व्यवहार किया जा सकता है। देव शब्द से स्वार्थ में तल् प्रत्यय करने पर देवता शब्द निष्पन्न होता है।[2]

इनके अतिरिक्त शतपथ गोपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में विशेष ज्ञान युक्त विद्वानों को देव कहा गया है। चक्षुओं को देव कहा है क्योंकि ये संसारिक पदार्थों का दर्शन कराते हैं। मन और ऋतुओं की भी देव संज्ञा बतलायी है। इस प्रकार हमने स्वामी दयानन्द यास्काचार्य प्रणीत निरुक्त तथा ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर देव शब्द व देवता शब्द के अनेक अर्थों पर विचार किया। अब हम बहुदेवतावाद के सन्दर्भ में विचार करेंगे कि देवता एक है अथवा अनेक देवता हैं। अनेक देवता हैं तो उनकी संख्या कितनी हो सकती है। ऋग्वेद में एक से लेकर 3339 देवताओं का वर्णन मिलता है। त्रिरन्तरिक्षं सविता महित्वना त्री रजांसि परिभूस्त्रीणि रोचना। / त्रिरो दिव: पृथिवीस्तिस्र इन्वति त्रिभिर्व्रतैरभि नो रक्षति त्मना।[3] उपर्युक्त मन्त्र में तीन देवताओं का वर्णन किया है परन्तु तीन का तीन बार योग करने पर यह संख्या 9 हो जाती है। आचार्य यास्क तीन देवता मानते हैं तथा अन्य देवताओं का अन्तर्भाव इन तीनों में ही करते हैं।[4] ऋग्वेद में 33 देवताओं का वर्णन स्थान स्थान पर उपलब्ध होता है। निम्नलिखित मन्त्र में इन्हीं देवताओं का वर्णन किया है। ये देवासो दिव्येकादशस्थ पृथिव्यामध्येकादशस्थ। अप्सुक्षितो महिनैकादशस्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्[5] तैंतीस देवताओं के सम्बन्ध में अन्य मन्त्र संख्या ऋग्वेद (1.34.11)भी द्रष्टव्य है। वैदिक संहिताओं ब्राह्मण ग्रन्थों व आरण्यक ग्रन्थों में भी स्थान स्थान पर 33 देवताओं का उल्लेख मिलता हैं। यथा– "अष्टौ वसव एकादश रूद्रा द्वादशादित्या त्रयस्त्रिंशत्वेव देवा"[6] ऐतरेय ब्राह्मण में भी इन्हीं 33 देवताओं का प्रकारान्तर से वर्णन किया गया है "त्रयस्त्रिंशद् वै देवाः अष्टौवसवः एकादश रूद्रा द्वादशादित्या प्रजापति वषटकारश्च।"[7] आठ वसु ग्यारह रूद्र बारह आदित्य प्रजापति और वषट ये 33 देवता हैं। ऋगवेद के प्रथम मण्डल के 45 वें सूक्त के द्वितीय मन्त्र में देवताओं की संख्या 303 मानी गयी है।[8] इतना ही नहीं आगे चलकर ऋग्वेद में तीन हजार तीन सौ उन्तालीस (3339) देवताओं का वर्णन प्राप्त होता है।[9] यदि पुराणों के सन्दर्भ में कहें तो पुराणों में देवताओं की संख्या 33 करोड़ तक मानी गई है। उपर्युक्त दी गई देवताओं की संख्या से ही कुछ विदवानों ने वेदों में बहुदेवतावाद का उद्घोष किया तथा वेदों को बहुदेवतावादी एवं अनेकेश्वरवादी बताया है।

" मैक्समूलर द्वारा प्रतिपादित हेनोथीज्म या कथेनोथीज्म नामक अत्यन्त विवाद ग्रस्त सिद्धान्त का जन्म इसी प्रकिया के आधार पर हुआ है। हेनोथीज्म का अर्थ है एक एक देवता को बारी बारी से सर्वोच्च देवता मानकर उसका गुणगान करना। इस सिद्धान्त के अनुसार वैदिक कवि जिस किसी देवता का आह्वान कर रहे होते हैं उसी को सर्वातिशायी दिव्यगुणों वाला देखने लगते हैं, तथा उस समय उसे ही सर्वस्वतन्त्र और सर्वोच्च देवता मानने लगते हैं "। एक, दो, तीन, तैंतीस, तीन सो तीन अथवा तीन हजार तीन सो उनतालीस देवताओं के पृथक् पृथक् नाम व इनका स्वरूप तथा ये किसके प्रतिनिधि हैं इस प्रकार का ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि में कोई वर्णन प्राप्त नहीं होता। स्वामी दयानन्द शतपथ ब्राह्मण के मत का स्थापन करते हुए ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वेदोक्त 33 देवताओं को व्यवहार के देवता मानते हैं तथा शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ही इनका विभाजन करते हैं यथा आठ वसु अग्नि पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ चन्द्रमा और नक्षत्र हैं। इनका वसु नाम इसलिए है कि ये समस्त पदार्थों के निवास स्थान हैं और इन्हीं में वास करते हैं। ग्यारह रूद्र शरीर में विद्यमान दश